कुछ चर्चित शे'र

शह्र में सब ही मानते हैं हमें
कैसे-कैसे मुग़ालते हैं हमें

—नूर तक़ी 'नूर'

जो देखता हूँ वहीं बोलने का आदी हूँ
मैं अपने शह्र का सबसे बड़ा फ़सादी हूँ

—शकील शाह

वो अब तिजारती पहलू निकाल लेता है
मैं कुछ कहूँ तो तराजू निकाल लेता है

—अहमद क़माल 'परवाज़ी'

वो झूठ बोल रहा था बड़े सलीक़े से
मैं ऐतबार न करता तो और क्या करता

—'वसीम' बरेलवी

परिन्दे भी नहीं रहते पराए आशियानों में
हमारी उम्र गुज़री है किराए के मकानों में

—मूनिस बरेलवी

तुम्हारे जिस्म हैं पत्थर के, डूब जाओगे
ये मशविरा है समुन्दर को पार मत करना

—'ज़ख़्मी' मेरठी

तर्के-तआल्लुकात को इक लम्हा चाहिए
लेकिन तमाम उम्र मुझे सोचना पड़ा

—फ़ना निज़ामी कानपुरी

रोज़ खाली हाथ जब घर लौटकर जाता हूँ मैं
मुस्करा देते हैं बच्चे और मर जाता हूँ मैं

—राजेश रेड्डी

देखे न गए छाँव के ठिठुरे हुए बदन
आँगन तमाम धूप से भरना पड़ा मुझे

—देवेन्द्र 'माँझी'

इस तरह निश्चिन्त दफ़्तर को गए बेटा-बहू
घर में माँ ताले की सूरत और बच्चे चाबियाँ

—हरेराम 'समीप'

आपका मक़सद पुराना है मगर ख़ंजर नया
मेरी मजबूरी है यह, लाऊँ कहाँ से सर नया

—कृष्णानन्द चौबे

वो तो बता रहा था कई रोज़ का सफ़र
ज़ंजीर खींच के जो मुसाफ़िर उतर गया

—'होश' नोमानी

ये तेरी आँख के तेवर बता रहे हैं मुझे
कोई तो बात तुझे नागवार गुज़री है

—दास चतुर्वेदी

फिर यूँ हुआ, किसी ने बिठाया न पास में
पैबन्द लग चुके थे हमारे लिबास में

—राजा आदिल

नुमाइश तो गुलाबों की है लेकिन
फ़ज़ा से ख़ून की बू आ रही है

—होश नोमानी

लाख बेजान सही उसका भी मन दुखता है
खून नाहक हो तो ख़ंजर का बदन दुखता है

—'पारस' बहराइची

रंग का डिब्बा उठा लेने की इक सादा सी भूल
घर के बाहर खेलते बच्चे के चिथड़े उड़ गए

—निश्तर ख़ानक़ाही

आँधी को ये गुमान कि बस इक शज़र गया
लेकिन न जाने कितने परिन्दों का घर गया

—राजेश रेड्डी

सिर्फ़ साँसों का ख़ज़ाना है ख़ज़ाना ऐसा
ख़त्म करके ही मरा करता है जीने वाला

—मुनव्वर अली 'ताज'